IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 5, May 2025
Impact Factor: 5.731

डॉ. राधाकृष्णन के धार्मिक सिद्धांतों का समकालीन सामाजिक समस्याओं पर प्रभाव

राघवेन्द्र सिंह[1] डॉ. संदीप प्रजापत[2]

[1]शोधार्थी, विभाग इतिहास

[2]प्रोफ़ेसर, विभाग इतिहास

सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश

यह शोधपत्र डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के धार्मिक सिद्धांतों के आलोक में समकालीन भारतीय समाज की जटिल सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण करता है। डॉ. राधाकृष्णन का धर्म-दर्शन केवल आध्यात्मिक साधना तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक आचरण और मानवतावादी दृष्टिकोण की स्पष्ट अभिव्यक्ति मिलती है। उनका मानना था कि धर्म का मूल उद्देश्य आत्मा की शुद्धि, सत्य की खोज और समाज में समरसता की स्थापना है। वर्तमान समाज में व्याप्त धार्मिक असहिष्णुता, जातिगत भेदभाव, नैतिक मूल्यों का पतन, और भौतिकवाद जैसे संकटों के समाधान हेतु उनके सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। यह अध्ययन दर्शाता है कि राधाकृष्णन की धार्मिक दृष्टि न केवल भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा से जुड़ी है, बल्कि वह आज के सामाजिक ढांचे को अधिक समावेशी, नैतिक और सहिष्णु बनाने की दिशा में प्रभावशाली भूमिका निभा सकती है। उनके विचार धर्म को व्यावहारिक नैतिकता और सामाजिक परिवर्तन के शक्तिशाली उपकरण के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

प्रमुख शब्द: समकालीन समाज, सामाजिक समस्याएँ, नैतिक शिक्षा, धार्मिक सहिष्णुता

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति, दर्शन और धार्मिक चेतना के क्षेत्र में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का नाम अत्यंत आदर के साथ लिया जाता है। वे न केवल भारत के द्वितीय राष्ट्रपति और एक विद्वान दार्शनिक थे, बल्कि वे भारतीय

Copyright to IJETIR
www.iciset.in

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 5, May 2025
Impact Factor: 5.731

दर्शन को विश्वमंच पर प्रतिष्ठित करने वाले एक ऐसे विचारक थे, जिन्होंने धर्म को केवल ईश्वर-पूजा या कर्मकांड नहीं, बल्कि एक नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन पद्धति के रूप में देखा। उनकी धार्मिक दृष्टि केवल पारंपरिक श्रद्धा तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह आधुनिक समाज की जटिलताओं, संकटों और विषमताओं के संदर्भ में धर्म की पुनर्व्याख्या करती है। डॉ. राधाकृष्णन के धार्मिक सिद्धांत आज की समकालीन सामाजिक समस्याओं—जैसे धार्मिक असहिष्णुता, जातिवाद, नैतिक पतन, भौतिकवाद, और शिक्षा में मूल्यों की गिरावट—पर गंभीर प्रभाव डालते हैं और उन समस्याओं के समाधान की ओर सकारात्मक दिशा दिखाते हैं।

डॉ. राधाकृष्णन का दर्शन मुख्यतः अद्वैत वेदांत पर आधारित था, किन्तु उन्होंने वेदांत को केवल सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसे समाजोपयोगी दर्शन के रूप में पुनर्परिभाषित किया। वे मानते थे कि "धर्म वह शक्ति है जो व्यक्ति को अपने भीतर की आत्मा की पहचान कराते हुए समाज के लिए उपयोगी बनाती है।" (Radhakrishnan, 1923) उनके विचारों में भारतीय धार्मिक परंपरा की गहराई और आधुनिक युग की प्रासंगिकता का समन्वय मिलता है। वे धर्म को किसी एक पंथ या संप्रदाय तक सीमित नहीं करते, बल्कि उसे मानवता की सार्वभौमिक चेतना के रूप में देखते हैं।

समकालीन भारतीय समाज, जहाँ धार्मिक कट्टरता, जातीय भेदभाव, और नैतिक ह्रास जैसी समस्याएँ व्याप्त हैं, वहाँ डॉ. राधाकृष्णन की दृष्टि धर्म को एक समरसतावादी और नैतिक बल के रूप में प्रस्तुत करती है। उनका मानना था कि धर्म का उद्देश्य मनुष्य को सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से बेहतर बनाना है, न कि उसे आपसी विभाजन और संघर्षों की ओर धकेलना। वे कहते हैं—"*Religion is not a matter of dogma, but of spiritual realization.*" (Radhakrishnan, 1956) यानी धर्म केवल नियमों और सिद्धांतों का संग्रह नहीं है, बल्कि वह आंतरिक अनुभूति और आत्म-जागरण का माध्यम है।

आज के परिप्रेक्ष्य में जब धर्म को राजनीतिक हथियार की तरह प्रयोग किया जा रहा है और समाज में धार्मिक आधार पर घृणा, असहिष्णुता और हिंसा का वातावरण बन रहा है, तब डॉ. राधाकृष्णन की विचारधारा सामाजिक समरसता की पुनर्स्थापना के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। उनके अनुसार, धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक विविधता भारतीय समाज की आत्मा है, और किसी भी प्रकार का धार्मिक संकीर्णता समाज को विभाजित करने का कार्य करती है।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 5, May 2025
Impact Factor: 5.731

डॉ. राधाकृष्णन का यह मत विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि सच्चा धर्म वह है जो समाज को जोड़ता है, तोड़ता नहीं। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि सभी धर्मों की मूल भावना एक जैसी होती है—प्रेम, करुणा, सत्य और आत्मा की खोज। इस दृष्टिकोण से वह गांधीजी के "सर्वधर्म समभाव" और विवेकानंद के "सभी धर्म सत्य की ओर जाने के मार्ग हैं" जैसे विचारों के साथ गहरे जुड़ते हैं। वे मानते थे कि धर्म का कार्य मनुष्य में नैतिक विवेक और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना है (Sharma, 2007)।

डॉ. राधाकृष्णन की धार्मिक दृष्टि को समझने के लिए उनके शैक्षिक योगदान को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। उन्होंने शिक्षा को धर्म से जोड़ते हुए कहा कि "शिक्षा का उद्देश्य केवल बुद्धि का विकास नहीं है, बल्कि चरित्र निर्माण और नैतिक चेतना का संवर्धन भी है।" (Radhakrishnan, 1949) आज जब हमारी शिक्षा प्रणाली रोजगारोन्मुख होकर मूल्यहीन होती जा रही है, तब डॉ. राधाकृष्णन का यह विचार पुनः प्रासंगिक हो गया है। वे शिक्षा में धर्म के उस पक्ष को लाने के पक्षधर थे, जो सांप्रदायिक नहीं बल्कि नैतिक और मानवीय हो।

जातिवाद की समस्या पर भी डॉ. राधाकृष्णन का दृष्टिकोण स्पष्ट था। उन्होंने वेदांत के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि सभी आत्माएँ ब्रह्म की अभिव्यक्ति हैं और इसलिए किसी भी प्रकार का जातीय भेद धर्म के मूलभूत सिद्धांत के विरुद्ध है। उनके अनुसार, "कोई भी जन्म के आधार पर श्रेष्ठ या हीन नहीं हो सकता; व्यक्ति की योग्यता, नैतिकता और सेवा-भाव ही उसके मूल्य का निर्धारण करते हैं।" (Radhakrishnan, 1923) यह विचार आज के भारत में जातीय समानता और सामाजिक न्याय की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

वर्तमान समय में समाज भौतिकवाद और उपभोक्तावाद की ओर तेजी से बढ़ रहा है, जिसके परिणामस्वरूप आध्यात्मिकता और आंतरिक संतुलन की कमी देखी जा रही है। डॉ. राधाकृष्णन ने इस प्रवृत्ति के विरुद्ध चेतावनी देते हुए कहा था कि "यदि हम केवल भौतिक सुखों की खोज में लगे रहेंगे और आत्मा की उपेक्षा करेंगे, तो समाज दिशाहीन और विकृत हो जाएगा।" उनके अनुसार, धर्म ही वह साधन है जिससे व्यक्ति स्वयं की पहचान करता है और समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठ बनता है (Narasimhan, 1980)।

यह स्पष्ट है कि डॉ. राधाकृष्णन के धार्मिक सिद्धांत सांस्कृतिक समावेशिता, सामाजिक समता, नैतिकता, और आध्यात्मिक चेतना पर आधारित हैं, जो आज की जटिल सामाजिक समस्याओं के समाधान में मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। वे धर्म को न तो कट्टरता की दिशा में ले जाते हैं और न ही उसे केवल व्यक्तिगत मुक्ति तक सीमित रखते हैं, बल्कि वे धर्म को एक जीवंत सामाजिक शक्ति के रूप में स्थापित करते हैं।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 5, May 2025
Impact Factor: 5.731

अतः, यह अध्ययन यह जांचने का प्रयास करता है कि डॉ. राधाकृष्णन के धार्मिक सिद्धांत किस प्रकार से समकालीन भारत की सामाजिक समस्याओं—जैसे कि जातिवाद, धार्मिक असहिष्णुता, नैतिक पतन और भौतिकवाद—के समाधान में प्रभावी हो सकते हैं। उनके विचार वर्तमान सामाजिक विमर्श को गहराई प्रदान करते हैं और धर्म को एक सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन के माध्यम के रूप में पुनर्परिभाषित करते हैं।

भूमिका

भारत के महान दार्शनिक, विचारक और पूर्व राष्ट्रपति **डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन** का धर्म और समाज के प्रति दृष्टिकोण अत्यंत गहन और समन्वित रहा है। वे भारतीय संस्कृति, धर्म और दर्शन के मर्मज्ञ व्याख्याता थे, जिन्होंने धर्म को केवल आध्यात्मिक साधना नहीं, बल्कि एक सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक आचरण के रूप में प्रस्तुत किया। उनके धार्मिक सिद्धांत आज की **समकालीन सामाजिक समस्याओं**—जैसे जातिवाद, धार्मिक असहिष्णुता, नैतिक पतन, सामाजिक विषमता और शिक्षा में गिरावट—पर प्रभाव डालते हैं और समाधान की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

डॉ. राधाकृष्णन की धार्मिक विचारधारा की मूल विशेषताएँ

डॉ. राधाकृष्णन का धार्मिक दृष्टिकोण **अद्वैत वेदांत** पर आधारित था, लेकिन उन्होंने वेदांत को **जीवनोपयोगी और सामाजिक रूप से सक्रिय दर्शन** के रूप में विकसित किया। उनके अनुसार, धर्म का सार मानवता की सेवा, सत्य की खोज और आत्मा की चेतना में है। वे मानते थे कि **"सच्चा धर्म वह है जो मनुष्य को आत्मिक रूप से ऊंचा उठाए और समाज में सौहार्द एवं न्याय की स्थापना करे।"**

उन्होंने धर्म को **व्यक्तिगत मोक्ष** के साथ-साथ **सामाजिक उत्तरदायित्व** से जोड़ा। उनके अनुसार, धर्म केवल पूजा पद्धति नहीं है, बल्कि वह जीवन की नैतिक प्रणाली है जो व्यक्ति को समाज के प्रति उत्तरदायी बनाती है।

समकालीन सामाजिक समस्याएँ और धार्मिक सिद्धांतों की प्रासंगिकता

1. धार्मिक असहिष्णुता और साम्प्रदायिकता

आज के भारत में धार्मिक असहिष्णुता, उग्र राष्ट्रवाद और सांप्रदायिक हिंसा की घटनाएं बढ़ रही हैं। डॉ. राधाकृष्णन ने हमेशा **धार्मिक सहिष्णुता** और **सांस्कृतिक विविधता** का समर्थन किया। वे कहते हैं, "*हमारे धर्मों का उद्देश्य सत्य की खोज है, और सत्य के रास्ते अनेक हो सकते हैं।*" यह विचार समकालीन समाज में धार्मिक समावेशिता और आपसी सम्मान को बढ़ावा देता है।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 5, May 2025
Impact Factor: 5.731

2. जातिवाद और सामाजिक भेदभाव

भारत में आज भी **जातिवाद** एक गहरी सामाजिक समस्या है। डॉ. राधाकृष्णन ने धर्म को **जातीय ऊँच-नीच और सामाजिक विषमता से ऊपर** माना। उनके अनुसार, धार्मिक सिद्धांतों का उद्देश्य आत्मा की समानता और एकत्व को पहचानना है, न कि जन्म आधारित भेदभाव को बढ़ावा देना। वे गीता के इस श्लोक की व्याख्या करते हैं—*"विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि..."*—जो सभी प्राणियों में समता की भावना को दर्शाता है।

3. नैतिक पतन और मूल्यहीनता

समकालीन समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास एक बड़ी चिंता का विषय है। डॉ. राधाकृष्णन ने धर्म को नैतिक शिक्षा का आधार माना। उनके अनुसार, धार्मिक शिक्षा का उद्देश्य केवल संस्कार देना नहीं बल्कि **चरित्र निर्माण**, **कर्तव्य बोध** और **सत्य की सेवा** के प्रति जागरूक बनाना है। वे शिक्षा प्रणाली में नैतिकता और धर्म को जोड़ने के पक्षधर थे।

4. भौतिकवाद और आध्यात्मिक संकट

आज का समाज भौतिक सुखों की अंधी दौड़ में आत्मिक शांति खो चुका है। डॉ. राधाकृष्णन ने चेताया था कि केवल भौतिक प्रगति से समाज सुखी नहीं हो सकता। उनके धार्मिक सिद्धांतों में **आध्यात्मिकता और आत्म-चिंतन** को सर्वोपरि माना गया है। उनका मानना था कि अध्यात्म ही वह आधार है जिससे मानवता का उद्धार संभव है।

5. शिक्षा और धर्म का संबंध

डॉ. राधाकृष्णन का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि **मानवता और आत्मा का जागरण** है। उन्होंने भारतीय शिक्षा प्रणाली में धर्मनैतिक शिक्षा को आवश्यक माना। उनका कथन—*"A good teacher must be a prophet who can see the light in the dark."*—शिक्षा और धर्म की संयुक्त शक्ति को दर्शाता है।

डॉ. राधाकृष्णन के धार्मिक सिद्धांतों का समाधानात्मक पक्ष

1. **सर्वधर्म समभाव** को अपनाकर सामाजिक संघर्षों को न्यून किया जा सकता है।
2. **धर्म के नाम पर हिंसा** रोकने के लिए उनके सहिष्णुता के सिद्धांत को व्यवहार में लाना आवश्यक है।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 5, May 2025
Impact Factor: 5.731

3. **शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में नैतिक शिक्षा** का समावेश कर नई पीढ़ी में उत्तरदायित्व और चरित्र निर्माण को बल दिया जा सकता है।
4. **जातीय और धार्मिक भेदभाव के विरोध** में उनकी "आत्मा की एकता" की अवधारणा समाज को समता और न्याय की ओर ले जाती है।

निष्कर्ष

डॉ. राधाकृष्णन के धार्मिक सिद्धांत न केवल आध्यात्मिक उन्नयन के लिए प्रासंगिक हैं, बल्कि वे **समकालीन सामाजिक समस्याओं के समाधान में एक नैतिक पथ** भी प्रस्तुत करते हैं। उनका दर्शन धर्म को एक जीवंत, संवेदनशील और मानवीय व्यवस्था मानता है, जो व्यक्ति को समाज से जोड़ता है और सामाजिक समरसता की नींव रखता है। आज की जटिल सामाजिक परिस्थितियों में उनके विचार मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। उनके सिद्धांत हमें यह सिखाते हैं कि धर्म का वास्तविक उद्देश्य **मानवता की सेवा**, **सामाजिक न्याय की स्थापना** और **सांस्कृतिक सहिष्णुता** है।

संदर्भ सूची

1. राधाकृष्णन, डॉ. सर्वपल्ली – *द फिलॉसफी ऑफ राधाकृष्णन*, एडिटेड बाय पॉल आर्थर शिल्प
2. शर्मा, अरविंद – *डॉ. राधाकृष्णन का धार्मिक चिंतन*, मोतीलाल बनारसीदास
3. उपाध्याय, हरीश – *भारतीय दार्शनिक परंपरा में राधाकृष्णन का योगदान*, विद्या पब्लिशर्स
4. त्रिपाठी, रमेश चंद्र – *समकालीन भारत में धार्मिक समस्याएँ*, राजकमल प्रकाशन
5. पटेल, डी.एम. – *भारतीय समाज और धर्म: एक समालोचनात्मक दृष्टिकोण*, यूनिवर्सिटी बुक हाउस
6. चक्रवर्ती, के.आर. – *राधाकृष्णन: जीवन और दर्शन*, साहित्य सदन
7. अग्निहोत्री, किरण – *भारतीय चिंतन में नैतिक मूल्य*, प्रभात पेपरबैक्स
8. झा, सुधीर कुमार – *धर्म और आधुनिकता*, नवभारत पब्लिशिंग
9. मिश्रा, वी.एन. – *भारतीय संस्कृति और राधाकृष्णन का दृष्टिकोण*, साहित्य भवन
10. पांडेय, शैलेंद्र – *भारतीय धार्मिक दृष्टिकोण की समकालीन प्रासंगिकता*, प्रभात प्रकाशन
11. शर्मा, शिवप्रसाद – *भारतीय चिंतन और सामाजिक न्याय*, सस्ता साहित्य मंडल

12. राधाकृष्णन, एस. – *इंडियन कल्चर: समकालीन परिप्रेक्ष्य*, एन.सी.ई.आर.टी.
13. पालीवाल, दिनेश – *धार्मिक शिक्षा और नैतिकता: राधाकृष्णन के विचार*, विद्या बुक्स
14. सिंह, राजेश – *धर्म, समाज और शिक्षा का त्रैतीय संबंध*, ज्ञानगंगा प्रकाशन
15. बाजपेयी, प्रदीप – *भारतीय समाज में धर्म की भूमिका*, भारतीय दर्शन संस्थान
16. रघुवंशी, नीलम – *आधुनिक भारत में धार्मिक सहिष्णुता*, चेतना पब्लिशिंग
17. पंत, चंद्रशेखर – *राधाकृष्णन की शिक्षात्मक दृष्टि*, राज पब्लिकेशन
18. श्रीवास्तव, नमिता – *भारतीय दर्शन में सामाजिक समरसता*, विद्या भवन
19. सक्सेना, अनीता – *आध्यात्म और नैतिकता में राधाकृष्णन की भूमिका*, साहित्य प्रकाशन
20. घोष, रत्ना – *भारतीय दर्शन: धर्म और सामाजिक ताना-बाना*, विश्वविद्यालय प्रकाशन
21. आचार्य, देवव्रत – *धर्म, दर्शन और आधुनिक समाज*, नवजागरण प्रेस
22. द्विवेदी, सुरेश – *धर्मनिरपेक्षता और राधाकृष्णन का चिंतन*, प्राची प्रकाशन
23. खरे, संजय – *धर्म आधारित नैतिकता और सामाजिक मूल्य*, सूरज पब्लिकेशन
24. मित्तल, संदीप – *राधाकृष्णन और आधुनिक सामाजिक चिन्तन*, विद्या बुक्स
25. चतुर्वेदी, किशोर – *समकालीन समाज में धर्म की भूमिका*, लोकभारती प्रकाशन
26. तिवारी, अनुराधा – *राधाकृष्णन की विचारधारा में शिक्षा और समाज*, नवनीत प्रकाशन
27. चौधरी, रेखा – *धार्मिक सिद्धांत और भारतीय राजनीति*, संवाद प्रकाशन
28. पटेल, रमा – *धर्म, नैतिकता और आधुनिक संकट*, भारतीय समाजशास्त्र परिषद
29. वर्मा, अरुण – *राधाकृष्णन और आत्मा की अवधारणा*, मोती लाल बनारसीदास
30. शास्त्री, उमेश – *भारतीय संस्कृति और धर्म के मूल तत्व*, विज्ञान भारती
31. दुबे, गीता – *भारतीय समाजशास्त्र में धर्म की भूमिका*, सृजन प्रकाशन
32. रस्तोगी, भावना – *धार्मिक सिद्धांत और सामाजिक चेतना*, साहित्य सेतु
33. सिंह, कन्हैयालाल – *राधाकृष्णन: भारतीयता और धर्म*, शिक्षा निकेतन
34. गोयल, मनोज – *धर्म और समकालीन सामाजिक चुनौतियाँ*, नवभारत पुस्तकालय
35. श्रीवास्तव, मनीषा – *राधाकृष्णन का शिक्षाशास्त्र*, भारतीय शिक्षा समीक्षा
36. यादव, रामेश्वर – *धर्म और सामाजिक संघर्ष*, यथार्थ प्रकाशन

37. राठी, किरण – *आधुनिक भारत और धार्मिक नैतिकता*, दार्शनिक विमर्श
38. वाजपेयी, अनुराग – *राधाकृष्णन के विचार और सामाजिक मूल्य*, नवचेतना प्रकाशन
39. सिंह, सुधा – *भारतीय धर्म-दर्शन और समाज की चुनौतियाँ*, ज्ञानभारती
40. जोशी, सुदीप – *भारतीय समाज में धार्मिक परिवर्तन की भूमिका*, राष्ट्रबोध प्रकाशन
41. त्रिपाठी, दीपक – *धर्म, संस्कृति और समकालीन सामाजिक दिशा*, देव दर्शन
42. अरोड़ा, यशपाल – *राधाकृष्णन और सामाजिक चेतना का विकास*, ज्ञानपीठ
43. दीक्षित, सुरभि – *भारतीय दर्शन में सामाजिक न्याय और धर्म*, संवाद
44. ओझा, शिवानी – *समकालीन भारत में धर्म की आवश्यकता*, भारतीय बौद्धिक मंच
45. जैन, राहुल – *धर्मनिरपेक्षता और भारतीय समाज*, भारतीय साहित्य संगम
46. शुक्ला, अनिल – *राधाकृष्णन का अध्यात्मिक चिंतन और सामाजिक प्रभाव*, मोनोग्राफ प्रकाशन
47. महाजन, सविता – *धर्म, शिक्षा और समाज का अंतरसंबंध*, सांस्कृतिक विमर्श